

गर्माती धरती और समुद्रों की क्षमता

इस वर्ष का नोबल शांति पुरस्कार उस संस्था को दिया गया है जिसने जलवायु परिवर्तन के बारे में जागरूकता फैलाने का महत्वपूर्ण काम किया है। जलवायु परिवर्तन का प्रमुख कारण वायुमंडल में बढ़ती कार्बन डाईऑक्साइड की मात्रा को माना जाता है। कार्बन डाईऑक्साइड व अन्य ग्रीनहाउस गैसों की मात्रा बढ़ने के कारण धरती का औसत तापमान बढ़ रहा है। और अब चिंता की बात यह सामने आ रही है कि समुद्र इसे रोकने में उतने कारगर साबित नहीं हो रहे हैं जितनी कि उम्मीद की गई थी।

वर्ष 2000 से पहले तक वायुमंडल में कार्बन डाईऑक्साइड की मात्रा में सालाना 1.5 अंश प्रति दस लाख अंश (पी.पी.एम.) की वृद्धि हो रही थी मगर अब यह दर 1.9 पी.पी.एम. तक पहुंच गई है। यह बात ऑस्ट्रेलिया के ग्लोबल कार्बन प्रोजेक्ट के जोसेफ कैनाडेल ने अपनी गणनाओं के आधार पर बताई है। इस वृद्धि के दो कारण बताए गए हैं। एक कारण तो यह है कि कार्बन डाईऑक्साइड के उत्पादन-उत्सर्जन में वृद्धि हुई है। इस वृद्धि के लिए औद्योगीकरण और यातायात प्रमुख रूप से जिम्मेदार माने जाते हैं।

दूसरा कारण यह है कि प्रकृति में कार्बन डाईऑक्साइड को सोखने की क्षमता में कमी आई है। प्रकृति में कार्बन डाईऑक्साइड का प्रमुख अवशोषक समुद्र है। कैनाडेल बताते हैं कि आज से पचास साल पहले तक जब हम प्रकृति



में 1 टन कार्बन डाईऑक्साइड छोड़ते थे, तो समुद्र 600 कि.ग्रा. को सोख लेते थे। आज समुद्रों द्वारा मात्र 550 कि.ग्रा. सोखी जा रही है। उदाहरण के लिए यू.के. के ईस्ट एंग्लिया विश्वविद्यालय के उटे शूस्टर और एण्ड्र्यू वॉटसन ने पाया है कि उत्तरी अटलांटिक क्षेत्र में कार्बन डाईऑक्साइड सोखने की क्षमता 1990 के मुकाबले आधी रह गई है। इसी तरह दक्षिणी सागर में पहले से कम कार्बन डाईऑक्साइड सोखी जा रही है।

कुल मिलाकर परिणाम यह है कि सरकारों की जलवायु परिवर्तन सम्बंधी समिति ने जितनी अपेक्षा की थी, समुद्र उतनी क्षमता से कार्बन डाईऑक्साइड को नहीं सोख रहे हैं। इसका कारण अभी स्पष्ट नहीं है। हो सकता है कि समुद्रों की ऊपरी परत संतृप्त हो चुकी है और पानी अच्छी तरह मथा नहीं जा रहा है। इस निष्कर्ष का एक ही आशय है: हमें कार्बन डाईऑक्साइड के उत्सर्जन में और भी अधिक कमी करनी होगी। (स्रोत विशेष फीचर्स)